धर्म जीवन

देवात्मा अंक

दिसम्बर 2006

परम पू० भगवान देवात्मा के देव रूप
के दर्शन हेतु कुछ उपयोगी पत्र

विशेष अंक

परम पूजनीय भगवान देवात्मा के 156 वें जन्म महोत्सव के उपलक्ष्य में यह विशेष अंक हम आपकी सेवा में अर्पित कर रहे हैं। परम पूजनीय भगवान देवात्मा का आर्विभाव एक अद्वितीय आर्विभाव था, उनके भीतर की देव शक्तियों के विकास से उनके भीतर अद्वितीय देव ज्योति और देव तेज का विकास हुआ। देव ज्योति और देव तेज से जो देव प्रभावों का एक अनोखा वातावरण बनता था, उसमें बैठकर एक एक अधिकारी आत्मा का अथाह हित होता था, होता है और होता रहेगा, उनकी ही देव ज्योति में उनके कुछ विशेष शिष्यों ने सत्गुरु के अनोखे रूप की जितनी झलक देखी उनको पू० भगवान की सेवा में पत्रों द्वारा पेश किया। इस विशेष अंक में दो महान हस्तियों के पत्र दे रहे हैं, जिन्होंने परम पू० भगवान देवात्मा के साक्षात चरणों में रहकर उनके अनोखे जीवन की लीला को देखा, अनुभव किया और लिपिबद्ध किया। उनमें से कुछ अनुभव और पत्र श्रद्वेय श्रीमान ईश्वर सिंह जी के हैं और कुछ श्रद्वेय श्रीमान धर्म बल जी के हैं। श्रद्वेय श्रीमान ईश्वर सिंह जी ने पू० भगवान के साक्षात चरणों में रहकर उनकी शारीरिक सेवा की, उनकी आज्ञाओं का पालन किया और रईसजादा होकर गुरू महाराज की बग्गी खींचना अपना महा सौभाग्य समझा। वह स्कूल के प्रिंसीपल बने तो उदाहरण बनकर चमके। बच्चों की अथाह सेवा की। धर्म विकासलय के प्रिंसीपल रहे तो उनके समय में विकासलय में स्त्रियों और पुरूषों की गहमा गहम थी। उनका जीवन त्याग, तपस्या और सेवा का जीवन था। वही अपनी विशेष पूंजी के कारण देवात्मा के देव रूप की झलक देख सकते थे।

श्रद्वेय श्रीमान धर्म बल जी ने पू० भगवान की विज्ञान मूलक शिक्षा को बहुत बारीकी से समझा और धर्म विकासलप के प्रिंसीपल रहकर विकासर्थियों को शिक्षा दी। उनके बनाए हुए विकासार्थी ठोस सेवक वा कर्मचारी बनें। उन्होंने पू० भगवान का रूप इन पत्रों में लिपिबद्ध किया है।

यह दोनों महान हस्तियों के पत्रों द्वारा पाठक गण पू० भगवान के रूप की कुछ झलक देख सकेंगे । हमें आशा है कि पाठकों का बहुत हित साधन होगा। इस आशा के साथ यह अंक आपकी सेवा में समर्पित है।

आपकी सेवा में
सुरजीत बराड

धर्म जीवन

खण्ड 18 अंक 12
दिसम्बर 2006
वार्षिक मूल्य 50 रूपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

मैं भगवान देवात्मा के गुण क्यों गाता हूँ?

इसलिए कि -

1. वह सचाई के पूर्ण प्रेमक हैं, सचाई के ढूंढने, सचाई का साथ देने, सचाई की पोषकता करने और सचाई का प्रचार करने में आपने अपना सब कुछ भेंट किया है। अपने वचन वा कार्य से सचाई का हमेशा साथ दिया है।

2. वह मिथ्या के पक्के दुश्मन हैं, आप ने लाख दिक्कतें उठा कर और विरोधता सह कर भी आत्मिक वा धर्म की दुनियाँ से प्रत्येक मिथ्या को उड़ाया है।

3. वह अपने विश्वासों की स्वयं ही जांच पड़ताल करते रहे हैं। उन्हें अपना जो भी विश्वास सत्य के विरुद्ध मालूम हुआ, उसे छोड़ दिया है।

4. उन्होंने जब तक ईश्वर के अस्तित्व को सत्य समझा, तब तक उसकी खूब भक्ति की लेकिन जब ईश्वर का विश्वास मिथ्या मालूम हुआ, तब किसी की विरोधता की ज़रा भी परवाह न करते हुए उसे छोड़ दिया और उसके विरुद्ध खुल्लम-खुल्ला असाधारण निडरता से प्रचार किया।

5. उन्होंने जब मज़हबी पुस्तकों को इन्सान की बनाई हुई विश्वास किया और उन्हें पूर्णत: ग़लती से रहित विश्वास न किया।

6. उन्हें कहलाने वाली इलहामी पुस्तकों में जो बात मिथ्या मालूम हुई, उसके विरुद्ध युद्ध की घोषणा की। उसकी खूब धज्जियां उड़ाई। और इस तरह अन्ध कार में ठोकरें खाते हुए इन्सानों को रोशनी में लाए हैं।

7. वह ईश्वर को मिथ्या और नेचर और उसके अटल नियमों को सत्य जान कर ब्रह्म-वादी की बजाय नेचर-वादी हुए। नेचर में विकास या (Evolution) का जो सिलसिला हमेशा से चला आता है उसका आत्मिक दुनियाँ में आप ने ही प्रयोग किया।

8. उन्होंने सत्य धर्म के विषय में बिल्कुल निराले लासानी और दुर्लभ सत्यों और तत्वों को अपनी देव ज्योति में जाना, उनका प्रकाश किया और आत्मिक दुनियां की काया पलट डाली।

9. उन्होंने आत्मा की गठन, आत्मा के विनाश और विकास; धर्म और अधर्म, पुण्य और पाप, मोक्ष और विकास और मनुष्य के मुख्य लक्ष्य आदि आदि गूढ़ विषयों में लासानी सत्य शिक्षा दी।

10. उन्होंने अपनी उपरोक्त विज्ञान मूलक सत्य धर्म की शिक्षा को पूजनीय देव शास्त्र और अन्य अति हितकर ग्रन्थों में लिपिबद्ध किया।

11. यू. पी. के कान्य कुबज ब्राह्मण खानदान से होकर मिथ्या और अनुचित छूतछात और सब प्रकार के मिथ्या और हानिकारक रसमों-रिवाज का पूरे ज़ोर के

साथ खण्डन किया। न सिर्फ ख़ुद उनसे ऊपर हुए, बल्कि अपने जीवन के दृष्टान्तों और अद्वितीय संग्रामों से सैकड़ों मनुष्यों को उन ख़ौफ़नाक भूतों से अमली तौर पर आज़ाद किया।

12. उन्होंने किसी सच्चाई के मालूम होने पर उसके अनुसार चलने और उसका प्रचार करने में कभी और किसी सूरत में कमजोरी का प्रमाण नहीं दिया। हमेशा हर प्रकार के डर और लालच से ऊपर रहे। घोर से घोर विरोधता के तूफ़ानों और सख़्त से सख़्त बीमारी और जानकन्दिनी की अवस्था में भी हमेशा सत्य का ही साथ दिया।

13. उन्होंने मज़हबी दुनिया में पूर्णत: मिथ्या करामातों के मिथ्यापन को प्रगट किया।

14. उन्होंने हमेशा सत्य का बोल बाला किया और मिथ्या को कुचला है।

15. उन्होंने इन्सानी ज़िन्दगी का सत्य लक्ष्य सुख की बजाय आत्म ज्ञान और आत्म कल्याण प्रगट किया और कितने ही मनुष्यों को सुख के स्थान में आत्म ज्ञान और आत्म कल्याण को अपना लक्ष्य जानने और अनुभव करने के योग्य किया।

16. वह सत्य स्वरूप होने के अतिरिक्त पूर्ण हित स्वरूप हैं और आपने हमेशा और हर हाल में नेचर के चारों जगतों का हित चाहा और किया है।

17. उन्होंने विशेषकर मनुष्य मात्र का नाना प्रकार से महा मूल्यवान हित किया है और ऐसा करने में अपना सब कुछ भेंट धरा है।

18. उन्होंने निम्नलिखित पूर्णत: लासानी जीवन व्रत ग्रहण और पालन किया -

"सत्य शिव सुन्दर ही मेरा परम लक्ष्य होवे,
जग के उपकार ही में जीवन यह जावे ।"

19. उन्होंने अपने जानी दुश्मनों और कृतघ्नों का भी हमेशा हित चाहा और यथावसर हित किया है। उनका अहित न कभी चाहा और न कभी किया।

20. उन्होंने देवसमाज के नाम से सच्ची धर्म समाज की स्थापना की और सैंकड़ों और हज़ारों जनों को मिथ्या देवी देवताओं के मिथ्या विश्वासों और मिथ्या पूजा से निकालकर और सत्य देव का विश्वासी बनाकर और आठ मोटे मोटे पापों से बचाकर उसमें शामिल किया।

21. उन्होंने देवसमाज के अन्दर अपने सेवकों के जीवनों को उच्च करने का निराला प्रबन्ध किया और उच्च जीवन के अनुसार उन्हें श्रेणीबद्ध किया।

22. उन्होंने आत्माओं को सत्य धर्म का ज्ञान देने और उनका नाना प्रकार से परम कल्याण करने के लिए धर्म विकासालय की निराली संस्था को जारी किया है।

23. उन्होंने घोर से घोर पापियों को बदल कर उन्हें नया जीवन दिया है।

24. उन्होंने सैंकड़ों आत्माओं को अपने पहले किए हुए पापों की मैल से शुद्ध होने के लिए उनको सच्चा परिशोध करने के योग्य किया और सच्ची शुद्धि का एक निराला सिलसिला जारी किया है।

25. उन्होंने अधिकारी आत्माओं को नीच सुख अनुरागों और नीच घृणाओं की महा भयानक और हानिकारक तस्वीर दिखा कर उन्हें उनके विरुद्ध जंग करने में लगा दिया। और इस तरह आत्माओं को सच्ची मोक्ष लाभ करने के मार्ग पर डाल दिया।

26. उन्होंने अधिकारी आत्माओं तक अपने देव प्रभाव पहुंचाकर उनके अन्दर धर्म भावों के नियमित रूप से पैदा करने का निराला कारज शुरू किया है।

27. उन्होंने कितने ही स्वार्थियों को बदलकर परोपकारी बना दिया है।

28. उन्होंने अपने उपकारियों के उपकार महसूस करने और उनकी सेवा करने के अलौकिक दृष्टान्त अपने जीवन से दिखाए और उपकारियों के अतिरिक्त

आप बचपन में जिस वृक्ष पर खेले, बचपन में जिस बकरी का दूध पिया, जिन लेखकों की पुस्तकों के पाठसे आपको कोई लाभ हुआ, उन सबके उपकारों को महसूस किया और उनके हित के लिए शुभ कामनाएं की और कितने ही अधिकारी मनुष्यों के अन्दर अपने उपकारियों के उपकारों को महसूस करने और उनका हित परिशोध करने का एक नया युग शुरू कर दिया है।

29. उन्होंने अपने देव प्रभाव पहुंचा कर कई योग्य आत्माओं को दूसरों की शारीरिक और मानसिक सेवा करने के अतिरिक्त, आत्माओं के हित साधन में सहायक होने के योग्य बना दिया। उन्हें आत्माओं का सच्चा हितकारी और उपकारी बना दिया है।

30. उन्होंने अपने जीवन से आदर्श बेटा, आदर्श पिता, आदर्श भाई, आदर्श पति, आदर्श मालिक, आदर्श गुरू आदि आदि होने के अति सुन्दर और अनुकरणीय दृष्टांत दिखाये हैं।

31. उन्होंने नेचर गत सब सम्बन्धों से अनुचित अन्मेल को मिटाने और उच्च मेल लाने वाली निराली शिक्षा का दान दिया और अधिकांश आत्माओं को उस पर चलने के योग्य किया।

32. उन्होंने सत्य और शुभ के लाने असत्य और अशुभ के मिटाने का नाना प्रकार का कार्य शुरू करके, इस नारकीय दुनिया में सच्चा देवराज लाने का महान् कारज शुरू कर दिया है आदि आदि।

भगवान देवात्मा की किस किस निराली विशेषता को सामने लांऊ। उनके किस किस गुण और कारज को ब्यान करूं और उन पर बलिहार जाऊं। यही कामना करता हूँ कि उनके अद्वितीय देव रूप के अधिक से अधिक दर्शन कर सकूं। मैं और अधिक से अधिक अन्य अधिकारी आत्मा श्रद्धा, कृतज्ञता, विश्वास और आकर्षण के भावों से उनके साथ जुड़कर अपना कल्याण साधन कर सकें।

देवात्मा का बनने का आकांक्षी उनका
बहुत बहुत उपकृत सेवक
ईश्वर सिंह

तुम धर्म के पूर्ण अवतार गुरु, तुम पर जाऊं बलिहार गुरु।
तुम मेरे तारणहार गुरु, तुम पर जाऊं बलिहार गुरु।
तुम जीवन तत्व के शिक्षक हो, तुम मिथ्या मतों के नाशक हो।
तुम सत्य धर्म प्रवर्तक हो, तुम पर जाऊ बलिहार गुरु।
तुम नीच गति के नाशक हो, तुम उच्च गति के विकासक हो।
तुम उच्च मेल अस्थापक हो, तुम पर जाऊं बलिहार गुरु।
तुम सारे पाप मिटाते हो, और सत्य धर्म फैलाते हो,
तुम उजड़े घरों को बसाते हो, तुम पर जाऊ बलिहार गुरु।

सच्चे उपास्य देव भगवान देवात्मा

मैं क्यों भगवान देवात्मा को अपना सच्चा उपास्य देवता मानता हूं, और क्यों सदा उनके दर का भिखारी बना रहना चाहता हूं? इसलिए कि -

1. किसी सच्चे उपास्य देव में जिन सच्ची और सर्व्वोच्च विशेषताओं का वर्तमान होना आवश्यक है, वह सब विशेषताएं केवल एकमात्र भगवान देवात्मा में ही पाई जाती हैं। और उन के सिवाए और किसी भी मनुष्य या किसी कहलाने वाले ईश्वर, परमेश्वर वाहगुरू, अल्ला, ख़ुदा, गाड या उसके किसी अवतार पीर पैग़म्बर, हादी गुरू, रहनुमा, वली, सन्त, महन्त, सिद्ध, बुद्ध, तीर्थङ्कर आदि में नहीं पाई जातीं। ऐसी सर्वोच्च विशेषताओं वाला अस्तित्व देवात्मा के सिवाए न कोई पहिले था, न अब है, और न आयन्दा हो सकता है। अर्थात् यह कि एक ओर वह सब सुख विषयक सब प्रकार के नीच अनुरागों और उनसे उत्पन्न नीच घृणा की महा विनाशकारी शक्तियों से पूर्णत: रहित हैं, और दूसरी ओर वह सब प्रकार के हित और सब प्रकार के सत्य की पूर्णाङ्ग अनुराग और सब प्रकार के अहित और सब प्रकार की मिथ्या के लिए पूर्णाङ्ग घृणा की अद्वितीय शक्तियों से विभूषित सच्चे देवता वा देवात्मा हैं, और वही एक मात्र रूहानी जगत् के सच्चे सूर्य्य, सच्चे धर्म शिक्षक और अधिकारी आत्माओं के सर्वाङ्ग कल्याण कर्त्ता हैं।

2. मेरे अस्तित्व में जो मुख्य और मूल वस्तु मेरा आत्मा है, जिसको लेकर ही मेरे सब सुख, मेरे सब सम्बन्ध, मेरे सब लाभ, और मेरी सारी ज़िन्दगी है, और उसके विषय में सत्य ज्ञान का पाना और जहां तक सम्भव हो उसकी पतन और विनाश से रक्षा करना और उसका अधिक से अधिक विकास करना, मेरा मुख्य कर्त्तव्य है। मेरी यह मुख्य आवश्यकता जिस देव ज्योति और उस देव तेज की प्राप्ति से पूरी हो सकती है, उस देव ज्योति और देव तेज के भंडार यही एक मात्र भगवान देवात्मा ही हैं। उनके सिवाए मेरे जीवन की यह मुख्य आवश्यकता और किसी अस्तित्व के द्वारा न पहले पूरी हुई और न आयन्दा पूरी हो सकती है।

3. भगवान देवात्मा मेरे आत्मा के लिए जान और प्राण के सम्बन्धी हैं। वह मेरी योग्यतानुसार सच्चे अर्थों में मेरे लिए सर्वाङ्ग कल्याणकर्त्ता वा मेरे परम उपकारी हैं। जैसे अब तक कोई और वजूद उनके समान मेरा हितकर्त्ता सम्बन्धी प्रमाणित नहीं हुआ, वैसे ही आयन्दा भी नहीं हो सकता। अर्थात्

(1) उन्होंने मुझे नाना प्रकार के पाप कर्मों से बचाया है, और मुझे काम अनुराग, स्वाद अनुराग, आलस्य अनुराग और अहं अनुराग के महा नीच भावों की भयानक दासत्व से एक बड़ी सीमा तक स्वतन्त्र कर दिया है। और इन नीच भावों में से अभी तक जिस जिस का जहां तक मुझ पर अधिकार बाक़ी है, उसके विषय में सच्चा बोध जागृत करके उससे मुक्ति लाभ करने के सच्चे साधनों वा संग्राम में लगा दिया है।

(2) उन्होंने मुझे महा हानिकारक आत्म अन्धकार और नाना प्रकार के मिथ्या विश्वासों से मोक्ष दी है।

(3) उन्होंने मुझे आत्मा वा सत्य धर्म और मनुष्य जीवन के मुख्य लक्ष्य के विषय में दुर्लभ

सत्य ज्ञान प्रदान किया हैं

(4) उन्होंने मुझे ऐसी उमर में ही अपनी शरण में आने का उच्च अधिकार प्रदान किया, कि जिसमें अभी तक मेरे भीतर धन अनुराग और सन्तान अनुराग आदि कई नीच अनुराग पैदा ही नहीं हुए थे। और उनकी ही अपार कृपा से मैं आयन्दा भी उन नीच अनुरागों में फंसने से बच गया।

(5) उन्होंने मेरे भीतर हानि परिशोध विषयक उच्च भाव जागृत करके मुझे कई प्रकार के पाप कर्मों के विकारों से मोक्ष दी है और आयन्दा भी इस भाव के द्वारा पवित्र होने के मार्ग पर डाल दिया है।

(6) उन्होंने मेरे भीतर आत्मा के विषय में मानसिक बोध उत्पन्न करने के अतिरिक्त एक सीमा तक हार्दिक उच्च बोध भी उत्पन्न किया है और मुझे इस उच्च बोध को बढ़ाने वाले सच्चे साधनों और संग्राम में लगा दिया है।

(7) उन्होंने मुझे अपने सर्वोच्च देव रूप का नाना अङ्गों में एक सीमा तक सच्चा दर्शन करने का अधिकारी बनाया है और मेरे भीतर अपने प्रति एक सीमा तक अटल श्रद्धा, विश्वास, कृतज्ञता और आकर्षण के उच्च भावों को जागृत करके मेरे लिए बेबहा बरकतों का भण्डार खोल दिया है। और मुझे इन अति उच्च भावों के बढ़ाने के संग्राम और साधनों में लगा दिया है।

(8) उन्होंने मेरे भीतर एक सीमा तक शिष्टाचार विषयक नाना बोध, कर्त्तव्य पालन, सत्य भाषण, सत्य प्रतिज्ञा पालन और अन्य अधिकारी आत्माओं तक उनके अद्वितीय देव प्रभावों को पहुंचाकर उनके आत्माओं का हित साधन करने का भाव जागृत कर दिया है और इन उच्च भावों को अधिक से अधिक बढ़ाने के संग्राम और साधनों में प्रवृत कर दिया है आदि आदि।

इन सब आत्मिक महा दुर्लभ और अत्यन्त मूल्यवान उपकारों के सिवाए उनकी कृपा से मुझे अपनी शारीरिक स्वास्थ्य और मानसिक उन्नति, माली बेहतरी और पारिवारिक जीवन के उचित सुख की प्राप्ति आदि नाना विषयों में जो और कई प्रकार के महा उपकार लाभ किए हैं और उन्होंने मेरी सच्ची इज्ज़त को जिस क़दर बढ़ा दिया है, उसकी अलग बहुत लम्बी और बहुत शिक्षाप्रद और भगवान देवात्मा के देव प्रभावों की निराली विशेषता को प्रगट करने वाली कथा है, कि जिसे यहां पर ब्यान करने की गुंजायश नहीं है।

4. उन्होंने मुझे ऐसे सर्वोच्च कार्य में सेवाकारी होने का महा सौभाग्य अता किया है कि जो कार्य इस दुनियां में सब से मुख्य, सब से उच्च और सब से आवश्यक और कुल कामों की जान और बुनियाद है और जिसमें सेवाकारी बनने से मेरी तुच्छ ताकतों की जितनी सच्ची सफलता और मेरे जीवन की जितनी रक्षा और उन्नति है, उतनी सफलता, रक्षा और उन्नति और किसी भी कार्य में सेवाकारी होने से नहीं हो सकती।

5. उन्होंने अपने सर्वोच्च देव रूप का दर्शन कराने वाली सत्य धर्म विषयक शिक्षा देने वाली बहुत सी दुर्लभ और अत्यन्त कल्याणकारी पुस्तकें मुझे प्रदान की हैं, कि जिनको मैं अपने पास अपने आत्म कल्याण के लिए बेहद क़ीमती ख़जाना अनुभव करता हूं और उनके श्रद्धा और विचार पूर्वक पाठ से एक एक बार इस क़दर कृतार्थ होता हूं, कि जिसका कुछ ब्यान नहीं हो सकता।

6. उन्होंने मेरे लिए मेरी ज़िन्दगी के महा कठिन मार्ग में सच्ची सहायता देने वाले मेरे कितने ही सच्चे साथी वा धर्म सम्बन्धी पैदा कर दिए हैं।

7. उन्होंने इस दुनियां में पूर्णत: निराली धर्म समाज अर्थात् देव समाज स्थापन करके मुझे उसका अङ्ग बनने का महा सौभाग्य अता किया है।

8. उन्होंने मुझे कई प्रकार के अनुचित और महा हानिकारक दुखों से बचा लिया है और कई प्रकार के उचित और कल्याणकारी सुखों का भागी बना दिया है और आयन्दा के लिए अधिक से अधिक उच्च सुखों के लाभ का मार्ग खोल दिया है और मेरी आयु को बढ़ा दिया है।

तब ऐसे सर्वोच्च देव रूप के रखने वाले और अपने परम उपकारी भगवान देवात्मा के सिवाए मैं और किस को अपना सच्चा उपास्य देवता जानूं और मानूं। और किसके दर का सदा भिखारी रहना चाहूं? निश्चय उनके सिवाए मेरा और किसी और मनुष्य का कोई सच्चा उपास्य देव नहीं था, नहीं है, और नहीं हो सकता। यही कारण है कि मैं झूठे उपास्य देवों के पंजे से निकल कर और सच्चे उपास्य देव को लाभ करके अपने लिए क्या जिस्मानी, क्या मानसिक और क्या आत्मिक - सारांश यह कि सब पहलुओं में इस क़दर बेबहा बरकतों का भण्डार खुला हुआ पाता हूं, और अपने इस क़दर धन्य भाग्य अनुभव करता हूं, कि जिसकी कोई हद नहीं। निश्चय मैं अपने सामने बेहद उच्च बरकतों का भण्डार खुला हुआ देखकर और उन बरकतों के लाभ करने के मार्ग पर पड़ने का सौभाग्य पाकर अपने आप को इस दुनियां के बड़े बड़े विद्वानों, दौलतमन्दों, राजाओं और महाराजाओं आदि से बहुत अधिक सौभाग्यवान अनुभव करता हूं। और आत्मिक हित के सिवाए नाना प्रकार के उच्च सुखों को भी अजीब तरह से सम्भोग करता हूं। ऐसी अवस्था को पाकर मैं कई बार सोचने लग जाता हूं, कि कहां मैं और कहां मुझ तुच्छ को सारी दुनियां के सरताज भगवान देवात्मा की प्राप्ति और उनके देव प्रभावों को लाभ करके सच्चा धर्म जीवन लाभ करने के मार्ग पर पड़ने और उसके नायाब उच्च सुखों को पाने का उच्च अधिकार वा महा सौभाग्य!! मेरी अब बार बार यही कामना है, कि मेरे लिए इस महा सौभाग्य को जहां तक अधिक से अधिक सफल करना सम्भव है, वहां तक उसे सफ़ल बना सकूं और हर हाल में और सारी उमर अपने सच्चे उपास्य देव परम हित कर्त्ता भगवान देवात्मा के लिए वफ़ादार रह सकूं और मेरे सिवाए और भी अधिक से अधिक अधिकारी जन इस महा सौभाग्य को प्राप्त करके अपना परम कल्याण साधन कर सकें।

भगवान देवात्मा का एक बहुत बहुत उपकृत सदा उनके दर का भिखारी रहने का आकांक्षी, उनका नाचीज़ उपासक और सेवक।

धर्म बल

(आत्मिक पतन और जीवन 10 दिसम्बर 1929)

देते हैं धन्यवाद तुम्हें, मेरे दिल के सारे उद्‌गार,
धन्य - धन्य कहती तृप्त न होती, जिव्हा मेरी बारम्बार

भगवान देवात्मा मुझे नायाब सचाईयों की दुनियां में लाए हैं।

देवालय लाहौर

23 दिसम्बर 1944

मेरे परम उपकारी, परम हितकारी, परम पूजनीय भगवन् !

भगवन् ! आप पूर्ण सत्य अनुरागी और पूर्ण असत्य वैरागी हैं। रूहानी दुनियां में महा भयानक और हानिकारक मिथ्या विश्वासों और उन से पैदा शुदा पूर्णत: मिथ्या शिक्षाओं और मिथ्या बातों को दूर करके सचाई का निराला राज्य लाने वाले हैं। आप आत्मिक अन्धकार मिटा कर रूहानी सचाईयों के सच्चे और लासानी प्रकाशक हैं। मुझ अति तुच्छ वजूद पर भी आप की विशेष कृपा है। मुझे आप ही रूहानी सचाई की दुनियां में लाए हैं। मुझे रूहानी सदाकतों के देखने और अनुभव करने के योग्य बनाया हैं

1. मैं घोर अन्धकार में पड़ा आत्मा के बारे में ठोकरें खा रहा था। मैं आत्मा का खुदा का अंश, खुदा की आवाज़ या बज़ाते खुद खुदा समझता था। आह ! मैं किस कदर अन्धकार में था। जब खुदा का ख्याल ही मिथ्या है, तो उस पर मबनी ख़्यालात क्योंकर सच्चे हो सकते हैं? आपने मुझे आत्मा, हां मेरे अपने आत्मा की हक़ीकत दिखाई है। उसकी सेहत और रोगी अवस्था का ज्ञान और बोध दिया है। उसके बनने और बिगड़ने के सत्य और तत्व मुझ पर प्रगट किए हैं। सच्च है, मुझे घोर अन्धकार की दुनियां से निकाल कर रोशनी और सचाई की दुनियां में लाए हैं।

2. मेरे सच्चे सतगुरु ! आप ने ही सच्ची आज़ादी और झूठी आज़ादी की जुदा जुदा तस्वीरें दिखा कर मेरा बेहद भला किया है। नीच सुख अनुरागों और नीच घृणाओं के महा हानिकारक और विनाशकारी अधिकार और मिथ्या विश्वासों से उद्धार पाना सच्ची आज़ादी है, यह आप के सिवाए मुझे यह किसने दिखाना था। आप ने ही मुझे सच्ची आज़ादी लाभ करने के मार्ग पर डाला है।

3. आप ने ही मुझे दिखाया और महसूस कराया है, कि सच्ची शुद्धि क्या है? आत्मा को गन्दा मैला और बदसूरत बनाने वाली चिन्ताओं और क्रियाओं से पाक और पवित्र होना और इस प्रकार भली चिन्ताएं और क्रियाएं करने के योग्य होना ही सच्ची शुद्धि है। हां इसके लिए नीच चिन्ताएं और नीच क्रियाएं कराने वाली शक्तियों से उद्धार पाना लाज़मी है। सिरफ एक मिथ्या मत छोड़ दूसरे मिथ्या मत का इकरार हरगिज़ हरगिज़ शुद्धि नहीं। हां शुद्धि के शब्द का निहायत गलत इस्तेमाल और उसकी हतक करना है।

4. आप ने ही दिखाया और बोध कराया है, कि अपने अन्दर के नीच सुख अनुरागों और नीच घृणाओं से दलेरी और हिम्मत के साथ जंग करना और आप के देव तेज को पाकर उन पर जय पाना ही सच्ची बहादुरी है। अपनी नीच ख़्वाहिशों को पूरा करने में मस्त हाथी की तरह चलना और अपना और दूसरों का नाश करना सच्ची बहादुरी नहीं, बल्कि परले दर्जे की महा हानिकारक बुज़दिली और नामरदी है।

5. रूहानी जगत् के सूर्य ! आपने ही सच्चे और झूठे त्याग को मुझ तुच्छ पर प्रगट करके मेरा बेहद भला किया है। सत्य और शुभ की तरफ़ जाने और उसके लाभ करने में मेरे अपने अन्दर और बाहर जो कुछ रोक बनता है, उस का त्याग ही सच्चा त्याग या

वैराग है और इस त्याग की मुझे हर रोज़ की ज़िन्दगी में कदम कदम पर ज़रूरत है। किसी विश्वास या ख्याल की ख़ातिर घर बार छोड़ देना हरगिज़ हरगिज़ सच्चा त्याग नहीं। मिथ्या त्याग करके हज़ारों लाखों और करोड़ों जन अपनी हानि कर रहे हैं।

6. सच्चे सतगुरु ! आप ने और केवल आप ने ही मुझे सच्चे और हितकर और मिथ्या और हानिकारक साधनों का सच्चा ज्ञान और बोध दिया है। इस ज्ञान के बिना मैं झूठे और हानिकारक साधन करता हुआ और उनके करने में झूठा त्याग करता और दुख सहता हुआ, तबाह और बरबाद हो जाता, जैसा कि आपकी देव ज्योति और आप के ज़ाहिर किए हुए लासानी रूहानी सत्य ज्ञान से महरूम लाखों और करोड़ों इन्सान मिथ्या साधन करके तबाह और बरबाद हो रहे हैं। मैं एक तरफ़ नीच सुख अनुरागों और नीच घृणाओं को अपने अन्दर रखकर और दूसरी तरफ़ सच्चे साधनों को न जानकर और इसलिए उन्हें न करके और मिथ्या साधनों में अपना माल वा धन और समय खर्च करता हुआ बिल्कुल तबाह और बरबाद हो जाता। आपने मुझे अपनी नायाब रोशनी देकर नायाब सचाईयां दिखाई हैं।

7. मेरे अद्वितीय सत्य अनुरागी भगवन् ! आप ने मुझे मेरी ज़िन्दगी का सच्चा लक्ष्य दिखाया है। मुख्य और गौण लक्ष्य का फ़र्क़ साफ़ दिखाया है। इस दुनियां में या अगली दुनियां में सुख स्वाद या स्वर्ग हासिल करना मेरा लक्ष्य नहीं। मेरा लक्ष्य अपने आत्मा के बारे में सत्य ज्ञान और सत्य मोक्ष पाना और अपना सच्चा आत्मिक कल्याण करना है। मैं सुख अनुरागी होकर, सुख लाभ में लगा रह कर ख़तम हो जाता। सच्ची मोक्ष और सच्चे विकास को मेरा लक्ष्य किस ने दिखाना था।

8. आत्मा की सच्ची सज़ा और जज़ा और पूर्णत: झूठी सज़ा और जज़ा का आप के सिवाए मुझे किस ने ज्ञान और बोध देना था। मैं रूहानी रोशनी से अन्धा, पाप और पुण्य करता तो इस दुनियां में था, और उसकी सज़ा और जज़ा मिलने का ख़्याल मरने के बाद अगली दुनियां में रखता था, जब कि आप की निराली देव ज्योति के मिलने से साफ़ नज़र आ रहा है, कि मेरे प्रत्येक पाप और पुण्य की क्रिया या चिन्ता के साथ ही मेरे आत्मा की बुरी या भली तबदीली या परिवर्तन की शकल में मुझे सज़ा या जज़ा मिलती रहती है। मेरे सच्चे सतगुरु ! आप ने मुझे किस क़दर वेशबहा सच्ची रोशनी दी है। इसके बिना मैं अरबों इन्सानों की तरह अन्धकार में ही भटकता फिरता।

9. सत्य और मिथ्या उपास्य देव के रूप को भी आप के सिवाए मुझे कौन दिखा सकता था। मैं जानता ही न था, कि सत्य उपास्य देव कौन होता है। मैं एक या दूसरे मिथ्या उपास्य देव को मानता और उसकी पूजा करता ही मर जाता। मुझे आत्मा के अन्धकार हर्त्ता, सच्चे मोक्ष दाता, सच्चे विकासकर्त्ता, देव अनुरागों और देव घृणाओं से विभूषित देव जीवनधारी, देव ज्योति और देव तेज दाता सत्य उपास्य देव का कहां पता लगना था? आप का यह एक उपकार ही किस कदर महान उपकार है। बिल्कुल सच्च है, आप ही सत्य उपास्य देव हैं। और आप ही अपनी देव ज्योति अधिकारी आत्माओं तक पहुंचा कर सत्य उपास्य देव के सच्चे उपास्य रूप को दिखाने वाले हैं। काश, कि मैं आप की सच्ची पूजा करता हुआ, अपना परम कल्याण साधन कर सकूं।

10. मेरे परम हितकर्त्ता सच्चे सतगुरु ! आप ने ही और सिर्फ़ आप ने ही मुझे दिखाया है, कि जहां मिथ्या और पाप से घृणा करना मेरे लिए हितकर है, वहां किसी भी इन्सान को घृणा करना मेरे लिए हानिकारक है। इसलिए मैं प्रत्येक इन्सान को घृणा करने से बचूं।

आप ने इस दुनियां में देव जीवन व्यतीत करते हुए ऐसे ही अद्वितीय दृष्टान्त दिखाए हैं। आप ने पाप से घृणा की है और अथाह घृणा की है, लेकिन पापियों से कभी घृणा नहीं की।

उपरोक्त नायाब सचाईयों को दिखाने के इलावा आप ने दिखाया है, कि इस विश्व के अन्दर दो चीज़ें ही प्रेम किए जाने के लायक हैं, एक देवात्मा और दूसरा निष्काम पर सेवा या विशुद्ध परोपकार। इन्सान के अन्दर प्रेम तो बहुत किसम के और बहुत से वजूदों के लिए हैं, लेकिन वह उन्हें आम तौर पर विनाश की ओर ले जाते हैं और उपरोक्त दोनों प्रकार के प्रेम इन्सान को सच्चाई और भलाई की तरफ़ ले जाते हैं। विविध सम्बन्धों में उच्च भावों से जुड़ कर इन्सान विकास पाता है और नीच सम्बन्ध सूत्रों या भावों से जुड़ कर विनाश को प्राप्त होता है। झूठ और पाप के साथ जंग में सचाई और भलाई ही जय पाते हैं। नेचर के भीतर विकासकारी ताकतें विनाशकारी ताकतों पर आख़िरकार जय पाती आई हैं, और नेचर में विकास होता आया है, और होता रहेगा। मुबारिक हैं वह आत्मा, जो नेचर के विकासकारी नियम का साथ देते हैं। मनुष्य का आत्मा नेचर के अन्दर होने के कारण नेचर के अटल नियमों के वैसे ही आधीन है, जैसे नेचर के और अस्तित्व। इसलिए यह भी बदलता है, बनता है या बिगड़ता है। अगर बिगड़ने का सिलसिला रहे तो अपनी अलग हस्ती के लिहाज़ से तबाह हो जाता है, आदि आदि गूढ़ और अति हितकर सचाईयों को दिखा कर मेरे भगवन् ! आप ने मेरा बहुत बड़ा हित साधन किया है। सच्च है, आप ही मुझे नायाब सचाईयों की दुनियां में लाए हैं। मैं आप को जिस क़दर धन्यवाद दूँ, उतना ही थोड़ा है। मेरी यही कामना है, कि मैं आप की ही इन दिखाई हुई सचाईयों की ज़्यादा से ज़्यादा क़दर कर सकूं और इन के अनुसार चलता रहकर इस लोक और परलोक में अपना परम हित साधन कर सकूं और यथा सम्भव औरों को भी यह बेशबहा निहायत हितकर सचाईयां दिखाने का काम कर सकूं।

आपका बहुतबहुत उपकृत
तुच्छ सेवक ईश्वर सिंह

जहां भर में सच्चा वही देवता है, हमारा गुरु जो कि देवात्मा है।
अनाथों का रक्षक है दीनों का वाली, दिलों के चमन का वही इक है माली
वह झूठ और बुराई का दुश्मन कमाली; है रूप उसका रोशन महान और जलाली।
वह आलम का सरताज पुश्तो पनाह है।
वह सबसे बढ़कर मुहब्बत के काबिल; वही है जो सच्ची अकीदत के काबिल
वही है जहां में इबादत के काबिल है, उसका दिल ही इताअत के काबिल
जहां भर में सच्चा वही देवता है।

साढ़े आठ वर्ष श्री देव गुरू भगवान के चरणों में

मुझ तुच्छ को 29 मार्च 1908 ई. से लेकर 12 सितम्बर 1913 ई. तक लगातार अपने परम पूजनीय श्री देव गुरु भगवान के निकट रहने का महा सौभाग्य प्राप्त रहा है। इस विशेष काल में यद्यपि मैंने भगवान की अद्वितीय महिमा के सम्बन्ध में बहुत कुछ देखा और उपलब्ध किया है, तथापि वह देवात्मा हो कर जो अद्वितीय देव शक्तियां रखते हैं और उन शक्तियों के विविध अंगों से परिचालित हो कर उन का अपने अद्वितीय जीवन की नाना घटनाओं के द्वारा प्रति दिन जिस जिस प्रकार से प्रकाश करते हैं, उनकी सच्ची और पूर्ण महिमा को वही देख सकता है, कि जिस में वह अद्वितीय देव शक्तियां वर्तमान हों। इस लिए साढ़े आठ साल तक उन के निकट रह कर भी जो कुछ मैंने अपने आत्मा की योग्यता के अनुसार उन की कुछ ज्योति को पाकर उन के जीवन के किसी अंग की एक वा दूसरी विशेषता को देखा और जाना है, वह भी सब नहीं किन्तु उन में से कुछ विशेषताओं को अपने और दूसरों के हित के लिए इस समय स्मरण करने और लिपिबद्ध करने की चेष्टा करता हूं-

(1) श्री देव गुरु भगवान अद्वितीय देव शक्तियों से विभूषित होने के कारण मनुष्यात्माओं के जीवन पथ दर्शक और जीवन दाता हैं। उनके भीतर मनुष्यात्माओं का नीच जीवन से उद्धार करने और उन्हें उच्च जीवन दान देने के लिए जिस कदर महासंग्राम रहता है, उसका शब्दों में वर्णन नहीं हो सकता। उन्हें जब देखो, इसी संग्राम में रत्त पाओगे। इन के देवात्मा से प्रति महूरत जो देव प्रभाव निकलते रहते हैं, वह क्या निकट और क्या दूर के अधिकारी अस्तित्वों तक पहुंच कर उन के भीतर उच्च परिवर्तन उत्पन्न करते रहते हैं। वह अपनी उपरोक्त अति प्रबल अकांक्षा से परिचालित हो कर आत्माओं के परित्राण और विकास के निमित्त नाना प्रकार की चिन्ताओं और कामों में रत रहते हैं। वह प्रति दिन बहुत प्रात: काल उठ कर अपने अद्वितीय जीवन संगीत के गान और अपनी महान् शुभ कामनाओं के द्वारा अति आश्चर्यमय और बल प्रद देव प्रभाव निकाल कर उन्हें नाना जगतों के सम्बन्धियों और सेवकों तक पहुंचाते हैं। फिर इसी लक्ष्य की सिद्धि के लिए सारे दिन में विविध प्रकार के काम करते हैं। उन के इस प्रकार के प्रति दिन के संग्रामों को देख कर, मुझे यह अनुभव होता रहा है, कि उन्हें यदि कोई फिकर रहता है तो यही कि क्योंकर आत्माओं का महा भयानक अन्धकार दूर हो और क्योंकर उन्हें जीवन विषयक सत्य ज्ञान प्राप्त हो; क्योंकर उनका नीच जीवन से उद्धार हो और क्योंकर उन में उच्च जीवन का विकास हो। वह जब किसी जन के साथ किसी साधारण विषय पर भी बात चीत करते हैं, तब आम तौर पर यह होता है कि आत्म हित के प्रबल अनुरागी होने के कारण वह उसी में से कोई सत्य लेकर उस को आत्मिक जीवन के एक वा दूसरे तत्व के विषय में अपनी देव ज्योति का दान देने और उसकी नीच आत्मिक अवस्था दिखाने और उससे उसे निकालने और उच्च जीवन सम्बन्धी किसी अंग की महिमा के प्रदर्शन करने के लिए संग्राम करने लगते हैं। वह रात के समय आंख खुल जाने पर देव समाज वा अन्य आत्माओं के हित सम्बन्धी नाना विषयों में सोच विचार में इतने प्रवृत हो जाते हैं, कि उससे उनकी नींद चली जाती है और उन्हें अपने शरीर के लिए

आवश्यक आराम तक नहीं मिलता और वह उसके कारण भी बीमार हो जाते हैं। परम पूजनीय भगवान के भीतर मनुष्यों को उनके जीवन के सम्बन्ध में सत्य ज्ञान, सत्य मोक्ष देने और उच्च भावों के विकसित करने की इस अति आश्चर्य और पूर्णत: निराली व्याकुलता और उन के ऐसे संग्रामों का ही यह फल है, कि देव समाज में सैंकड़ों आत्माओं का आत्म अन्धकार दूर हुआ है, उन्हें धर्म और अधर्म के विषय में सत्य ज्ञान प्राप्त हुआ है, उनका कई प्रकार की नीच गतियों से उद्धार हुआ है, और उन में एक वा दूसरे प्रकार के कई उच्च भाव जागृत हुए हैं।

(2) परम पूजनीय भगवान् के भीतर मुख्य और गौण के सम्बन्ध में अति सुन्दर और अति प्रबल बोध वर्तमान हैं। वह सर्वदा अपने नाना कामों में मुख्य को मुख्य और गौण को गौण देखने की आश्चर्य दृष्टि रखते हैं। उनके भीतर मुख्य के लिए गौण को त्याग करने का जो बल वर्तमान है, उसकी महिमा अवर्णनीय है। ऐसा कोई त्याग नहीं, कि जो वह मुख्य उद्देश्य के लिए नहीं कर सकते। एक ही समय में बहुत से आवश्यक कामों के होने पर उनके भीतर पहला प्रश्न यह होता है कि इन में से मुख्य कौन सा है, और उसे स्थिर करके उसके करने में वह पूरे ध्यान और बल के साथ लग जाते हैं। जहां तक एक ओर वह यह कभी पसन्द नहीं करते, कि कोई जन उन के किसी उचित अधिकार में बाधा दे, वहां उनकी हमेशा यह आज्ञा रही है कि किसी भी ज़रूरी काम के आ पड़ने पर वह चाहे किसी हालत में हों और चाहे कुछ करते हों, उन्हें उस की अवश्य ख़बर मिलनी चाहिए, और ऐसी किसी ख़बर के मिलने पर वह अपने सब प्रकार के उचित आराम या किसी गौण काम को उसी समय छोड़ देते रहे हैं। किसी आवश्यक बात के सम्बन्ध में यह स्थिर कर लेने पर कि उस का उसी समय पूरा करना मुख्य है, फिर कोई सुख और आराम वा किसी हानि का भय उन्हें उस के पूरा करने से रोक नहीं सकता। केवल इतना ही नहीं, कि वह खुद ऐसा करते हैं, किन्तु उन के भीतर यह व्याकुलता रहती है, कि उन के और समीपी जनों में भी मुख्य को मुख्य और गौण को गौण बोध करने की योग्यता पैदा हो और वह गौण के पीछे जाकर मुख्य से भ्रष्ट न हों। अपने निकट रहने वाले जनों को भगवान बार बार अपने उच्च प्रभावशाली शब्दों द्वारा उपदेश देते रहते हैं, कि तुम्हारे हृदय में अपने प्रत्येक सम्बन्ध में हमेशा यह प्रश्न उठना चाहिए, कि मुख्य बात क्या है और गौण क्या है और मुख्य बात को जान कर तुम्हें गौण को त्याग देना चाहिए।

(3) परम पूजनीय भगवान....प्रत्येक काम को पूरे तौर पर करने का अति प्रबल भाव रखते हैं। वह किसी भी काम को अपने हाथ में लेकर अपनी देव प्रकृति के अनुसार उसे अधूरा छोड़ना गवारा नहीं करते। किसी काम को अपूर्ण और खराब करने के सम्बन्ध में जिस कदर गहरी घृणा, और पूर्ण और उत्तम रूप से करने के लिए जिस क़दर गाढ़ अनुराग भगवान के भीतर वर्तमान है, उस का शब्दों में वर्णन नहीं हो सकता। भगवान किसी काम को आरम्भ करके उसे हालात के अनुसार बेहतर करने के बिना नहीं छोड़ते। वह अपने प्रत्येक कर्त्तव्य कर्म की ओर, और सब तरफों से अपना सारा ध्यान हटा कर, पूर्ण ध्यान देने की अति आश्चर्य योग्यता रखते हैं। केवल इतना ही नहीं कि वह खुद ऐसा करते हैं, किन्तु वह इस हितकर कर्त्तव्य भाव को औरों के भीतर भी पैदा करने के लिए बहुत ज़ोरदार तौर से अकांक्षा और व्याकुलता रखते हैं।

(4) कोई रोक वा कठिनाई भगवान की हितकर आकांक्षाओं और इरादों को बदल नहीं सकती। जब

भगवान किसी काम को करने का इरादा कर लेते हैं, तब वह हज़ार रोकों और कठिनाईयों के आने पर भी नहीं घबराते और उसे पूरा करने का अति सुन्दर और बलवान भाव रखते हैं। वह यह कभी गवारा नहीं करते, कि किसी प्रकार की कोई रोक या कठिनाई उन्हें उन के किसी पवित्र इरादे से इधर उधर करे। भगवान ने बारहा फरमाया है, कि जो मनुष्य अपने किसी अच्छे उद्देश्य में किसी रोक के वा कठिनाई के पैदा होने पर घबरा जाता है और दिल छोड़ कर बैठ जाता है, वह हरगिज़ मनुष्य कहलाने के योग्य नहीं। मनुष्य की उन्नति का बहुत बड़ा निर्भर इस पर है, कि वह अपने हितकर इरादों और आकांक्षाओं के पूरा होने में हर रोक पर जय लाभ करे। किसी शुभ उद्देश्य में किसी रोक के आने पर उस पर जय लाभ करने से बल बढ़ता और उससे परास्त हो जाने से बल घटता है। भगवान का प्रति दिन का जीवन उनकी इस अंग में महान् महिमा को बहुत उज्जवल रूप से प्रमाणित करता है।

(5) परम पूजनीय भगवान देवात्मा में सब जगतों के सम्बन्ध में सब प्रकार की हानि को अनुभव करने के निहायत सूक्ष्म और बहुत बलिष्ट और आद्वितीय बोध वर्तमान हैं। उनके कारण वह किसी अस्तित्व की अनुचित हानि और खराबी के सम्बन्ध में जो कुछ और जिस क़दर अनुभव करते हैं, वह कोई और नहीं कर सकता। वह किसी ऐसी हानि को केवल अनुभव ही नहीं करते, किन्तु अपने नीच गति विनाशक महा प्रबल अनुराग भाव के अनुसार जहां कहीं और जहां तक उनके लिए सम्भव हो, उस के दूर करने के लिए तैयार हो जाते हैं और जब तक उसे दूर नहीं कर लेते, तब तक वह आराम नहीं पाते। यहां तक कि जब वह किसी बड़े रोग के कारण चारपाई पर भी पड़े हुए हों, तब भी यदि उन्हें अपने यहां किसी हानि का पता लगे, तो उसे शरीर की ऐसी अवस्था में भी दूर करने के बिना चैन नहीं पाते और उसे मिटाने के लिए नाना प्रकार से यत्न करते हैं। उन के प्रति दिन के जीवन में इस बात का भली भान्ति प्रमाण मिलता है कि उनके राज्य में किसी प्रकार की और किसी के सम्बन्ध में कोई अनुचित हानि और ख़राबी रह नहीं सकती। वह सब प्रकार की अनुचित हानियों के सम्बन्ध में अत्यन्त गहरी घृणा रखते हैं। वह न केवल....वर्तमान अनुचित हानियों को देखने की विचित्र और अनोखी शक्ति रखते हैं, किन्तु किसी आने वाली अनुचित हानि के सम्बन्ध में भी बहुत तीव्र बोध रखते हैं। ऐसी प्रत्येक हानि के रोकने के लिए उन्हें नाना प्रकार के उपाय सोचते और स्वीकार करते देख कर उन के श्री चरणों में हृदय झुकने के बिना रह नहीं सकता।

(6) परम पूजनीय भगवान देवात्मा में जहां तक सम्भव हो, दिन और रात का अधिक से अधिक समय नाना प्रकार के उच्च और परहित सम्बन्धी कामों में व्यतीत करने के जिस कदर उच्च और ज़ोरदार भाव ठाठें मारते रहते हैं, उन की महिमा का शब्दों के द्वारा कुछ भी वर्णन नहीं हो सकता। शारीरिक स्वास्थ्य के लिए निहायत ज़रूरी थोड़े से समय को छोड़ कर उन्हें जब देखोगे एक या दूसरे हितकर काम में पूरे जोश के साथ रत पाओगे और अपने रोगी, दुर्बल और वृद्ध शरीर के साथ भी उन्हें इतना काम और परिश्रम करते देख कर, तुम्हें जैसे एक ओर बहुत हैरानी होगी, वहां यह भी अनुभव होगा, कि वह इस संग्राम में हैं कि इस समय में अधिक से अधिक नाना शुभ कार्य पूरे हों। उनके श्री चरणों के निकट रहते हुए मुझे यह स्पष्ट रूप से अनुभव होता रहा है, कि यदि सम्भव होता, कि उनका शरीर बिना किसी प्रकार के आराम के उनका (देवात्मा को) हर समय साथ दे सकता, तो वह अपने

इन ज़ोरदार भावों के कारण एक क्षण भर भी बिना काम के न रहते। जहां इस देश में हज़ारों मनुष्यों को निकम्मा रहने में खुशी वा तृप्ति मिलती है, वहां बड़ी से बड़ी बीमारी में भी भगवान काम करने के बिना रह नहीं सकते है और अपनी किसी बीमारी के समय उस की तकलीफ के भिन्न उन्हें इस बात की और भी अधिक तकलीफ़ होती है, कि उन का समय वृथा जा रहा है। अनेक बार उनकी यह तकलीफ़ इस क़दर बढ़ जाती है, कि वह उसी हालत में काम करने लग जाते हैं। बीमारी के कारण चारपाई पर निढाल पड़े हुए उन्होंने कई बार फ़रमाया है, कि जब मेरा शरीर मेरे जीवन व्रत सम्बन्धी किसी कार्य के पूरा करने में साथ न दे सके, तब फिर मेरे लिए इस दुनियां में रहने से क्या लाभ? और यह तो प्राय: सदा ही देखा गया है, कि भगवान की सारी रात एक वा अधिक रोगों के कारण तड़प तड़प कर कटी है और बहुत प्रात: काल अपना दैनिक एकांत साधन करने के बाद फिर किसी नए लेख के लिखने वा किसी और आवश्यक काम में लग गए हैं। परम पूजनीय भगवान के आत्मा की देव शक्तियां ही ऐसी अलौकिक हैं, कि जिन के बल से वह कितने काल से प्राय: सदा रोगी रह कर और वृद्ध होकर भी हर एक साल इस कदर काम पूरा करते हैं कि जिसे देखकर बहुत बड़ी हैरानी होती है। भगवान के भीतर नाना हितकर कामों के करने का इस कदर प्रबल अनुराग है, कि उन्होंने जीवन व्रत ग्रहण के बाद से आज तक कभी कोई छुट्टी नहीं मनाई। वह पर हित साधन विषयक अद्वितीय अनुराग रखने के भिन्न अपने आश्रित जनों को जहां तक उन की ताकत में है, अधिक से अधिक काम करने के योग्य बनाने के लिए नाना प्रकार से यत्न करते रहते हैं। इसीलिए भगवान के श्री चरणों में आकर केवल यही नहीं, कि नाना मनुष्य पहले की अपेक्षा बहुत बेहतर वा मुफ़ीद बन जाते हैं, किन्तु उनके पास रह कर प्रति दिन उन से जिस कदर हितकर काम निकलता है, वह उनके श्री चरणों में रहने के बिना कभी भी निकल नहीं सकता।

(7) परम पूजनीय भगवान क्या जीवित और क्या अजीवित अस्तित्वों को सब प्रकार की अनुचित हानि से बचाने और उन्हें यथा अवसर और यथा साध्य सुन्दर से सुन्दर और हितकर से हितकर बनाने के लिए सदा व्याकुल रहते हैं। इसी लिए जो अस्तित्व जहां तक उन के अधिकार में आ जाता है, उस की जहां तक सम्भव हो, न केवल अनुचित हानि से रक्षा होती है, किन्तु वह बेहतर से बेहतर बन जाता है। जिस मकान में उन का वास हो, चाहे वह उन का अपना हो, चाहे किसी और का, चाहे वह उस में थोड़ी देर रहें वा ज़्यादा देर, उसे वह पहले से अधिक साफ़ और सुन्दर और हितकर बना देते हैं। यदि कोई जड़ वस्तु उनके अधिकार में आ जावे, तो वह पहले से बेहतर और अधिक से अधिक काल तक ठीक हालत में रहने के योग्य हो जाती है। भगवान के पास कई ऐसी वस्तुएं हैं, कि जिन का वह वर्षों व्यवहार करते रहे हैं, यह व्यवहार करते करते घिस गई हैं, परन्तु टूटी नहीं या गुम नहीं हुई। भगवान के भीतर यह बहुत प्रबल भाव है कि किसी वस्तु का अपव्यवहार न हो और जब तक उचित व्यवहार करने से उसके लिए कायम रहना सम्भव हो, तब तक उस की हर हानि से रक्षा की जाये। जिन पौधों के साथ उन का सम्बन्ध हो जाता है, उनकी विशेष रूप से रक्षा करने और उन्हें जहां तक हो सके बेहतर बनाने का भाव रखते हैं। इसी प्रकार वह अपने आश्रित पशुओं और मनुष्यों की सब प्रकार से रक्षा और उन्हें बेहतर से बेहतर बनाने के लिए

व्याकुल रहते हैं। एक एक मनुष्य के बेहतर बनाने के लिए उन्होंने जो जो संग्राम किया है, और वर्षो तक लगातार संग्राम किया है, और अपने परिश्रम को नाना अयोग्य आत्माओं में बहुत कुछ निष्फल जाता देख कर भी, उस से मुख नहीं मोड़ा और उससे भयानक से भयानक और अति सांघातिक कष्ट पा कर भी और विविध प्रकार की अन्य हानियां उठा कर भी, उस के हित के लिए बराबर यत्न किया है, उस का दृष्टान्त मनुष्य जगत के इतिहास में कहीं पाया नहीं जाता। मुबारिक और हज़ार बार मुबारिक हैं वह अस्तित्व कि जो उन के अधिकार में आते हैं। जहां तक किसी के लिए सम्भव हो, उन के अधिकार में आ जाना अपनी नाना अनुचित हानियों से रक्षा पाना और अपना अधिक से अधिक हित लाभ करना है। यह शब्द श्री देव गुरू भगवान के देव हृदय से ही निकल सकते थे, कि "तुम योग्य हो कर जिस किसी अस्तित्व को जहां तक बेहतर बना सको, वहां तक तुम खुद बेहतर बनते हो, और तुम जिस किसी अस्तित्व को अनुचित हानि पहुँचा कर जहां तक बिगाड़ते हो, वहां तक तुम खुद भी अपने आत्मा को बिगाड़ते और उसे हानि पहुंचाते हो।"

(8) परम पूजनीय भगवान में प्रबन्ध और सुशासन विषयक जिस कदर शक्ति और योग्यता वर्तमान है, उसकी महिमा गाई नहीं जा सकती। ऐसे काम में सफल काम होने के लिए जिन उच्च शक्तियों की अवश्यकता है, वह भगवान के भीतर असीम रूप में वर्तमान हैं। वह अपने हाथ में किसी इन्तज़ाम को रख कर उस की रक्षा के लिए सब प्रकार के त्याग करने और दुख सहने के लिए तैयार रहते हैं। उन की यह महिमा उपलब्ध करने से सम्बन्ध रखती है और किसी तरह ब्यान नहीं हो सकती...।

(9) परम पूजनीय भगवान घोर से घोर विरोधिता के समय और प्रतिकूल से प्रतिकूल हालात में भी जिस धैर्य्य और हौसले का प्रकाश करते हैं, उस का किसी और के साथ मुकाबला नहीं किया जा सकता। जहां अपनों वा औरों की एक एक अनुचित क्रिया वा अत्याचार सम्बन्धी घटना से उन के अति कोमल और उच्च बोधधारी हृदय पर सख्त चोट लगती है, और वह उस से बिलबिला उठते हैं, वहां ऐसी अवस्था में भी उनका देवात्मा जो कुछ करना आवश्यक है, उस के करने के लिए आश्चर्य धैर्य और हौसले के साथ तैयार रहता है और वह दिल को तोड़ने और निराश करने वाली सब प्रकार की भयानक से भयानक घटनाओं पर जय लाभ करके जो कुछ करना आवश्यक है, वा जो कुछ कर्त्तव्य है, उस के साधन में लग जाते हैं। एक एक घटना के सदमे से वह अभी बिलबिला रहे हैं और अभी उस के सम्बन्ध में जो कुछ करना उचित था, उसके करने में लग जाते हैं। यूं तो इस पहलु में उनकी महान महिमा के सन्मुख मेरा तुच्छ हृदय बारहा झुकता रहा है, परन्तु महा कृतघ्न देवरत्न के समाज से निकाले जाने के समय इस सम्बन्ध में जो भगवान की महिमा मेरे सामने आई, उसने मेरे दिल पर जैसा निराला और विशेष असर किया, उस का मैं किसी प्रकार ब्यान नहीं कर सकता। उस की एक अकथनीय और महा शोचनीय क्रिया और धर्म के पथ से भ्रष्ट हो जाने से भगवान के दिल पर जो असह्य आघात लगा, उस का कौन अनुमान कर सकता है? इस महा कष्ट को पाकर भी वह अपने जीवन व्रत सम्बन्ध दैनिक साधनों और कामों में वैसे ही प्रवृत रहे, कि जैसे पहले थे। और फिर जब उस महा कृतघ्न जन ने विरोधियों के साथ साज़िश करके अपने परम पूजनीय और परम उपकारी गुरू के सम्बन्ध में पिशाचाना कार्रवाईयां

आरम्भ की, तब भगवान ने जहां एक ओर सत्य के महा बली हथियारों से उस का मुकाबिला करके उस पर लगातार जय पर जय लाभ की, वहां दूसरी ओर उसके साथ साथ वह अपने सारे कामों को भी प्रति दिन भलीभांत पूरा करते रहे। धन्य है और बार बार धन्य है उनका देवात्मा और धन्य है और बार बार धन्य है उनका देव बल।

(10) परम पूजनीय भगवान जिस बात को ठीक समझते हैं, उसे अमल में लाने की अद्वितीय योग्यता रखते हैं। अपनी सारी आयु में उन्होंने जो कुछ ठीक समझा है, उस की उन्होंने निडर और बेधड़क होकर केवल शिक्षा ही नहीं दी, किन्तु उसे आप करके दिखाया है। इंग्लैंड के मशहूर फ़िलासफ़र मिस्टर हरबर्ट स्पेन्सर सारी उमर पुस्तकें लिखते रहे। एक बार का ज़िकर है कि उन्होंने किसी विषय में लैक्चर दिया परन्तु उस में उन्हें कामयाबी न हुई। इस से वह इस नतीजे पर पहुंचे, कि उन्हें पुस्तकें लिखने के भिन्न और कोई काम न करना चाहिए। परन्तु भगवान ने अपने जीवन के उच्च विकास और अद्वितीय लक्ष्य को पूरा करने के निमित कभी किसी मुखालफत वा रोक वा विघ की कोई परवाह नहीं की। और उन्हें जब और जो कुछ ठीक बोध हुआ है, उसे अमली शक्ल देने से वह इंच भी इधर उधर नहीं हुए। उन की इस विशेषता के कारण और जगतों को छोड़ कर मनुष्य मात्र को जो कुछ मिला है और उसके भीतर जो अति आश्चर्य उच्च परिवर्तन आया है, वह सूर्य की रोशनी की न्याई ज़ाहर है। वह छोटी से छोटी और बड़ी से बड़ी हितकर बात को अमल में लाने के लिए व्याकुल रहते हैं और किसी सत्य और हित को जान लेने और उन को अमल में लाने के योग्य बनने में जो अन्तर है, उसे एक बार जब वह प्रगट करते हैं, तब उन की इस पहलू में भी अद्वितीय महिमा दिखाई देती है ।

ईश्वर सिंह

मर मिटे पर मिशन अपना, कभी भी छोड़ा नहीं।
लक्ष्य था जो सबसे आला, उससे मुंह मोड़ा नहीं।
जान तोड़ी जिस्म तोड़ा, दिल कभी तोड़ा नहीं।
जाती जिधर है सारी दुनियां, दिल उधर जोड़ा नहीं।
उमर भर संग्राम न्यारा, सब हमारे वास्ते।

सूचना

धर्म जीवन सम्बंधी हर प्रकार की जानकारी के लिए, चंदा आदि भेजने , कोई मैटर आदि भेजने के लिए साथ लिखे पते पर सम्पर्क करें या लिखें। :-

श्रीमान बलदेव सिंह जी,
House No. 3154, Sector 21-D,
Chandigarh - 160 022
Phone : 0172 - 4638229, 2716914

परम पूजनीय भगवान के निकट रह कर मैंने क्या देखा?

परम पूजनीय श्री देवगुरू भगवान के चरणों में आने व उनके निकट रहने को महोच्च सौभाग्य लाभ करके मुझे उनके देवात्मा में कई एक श्रेष्ठ गुणों को व्यक्तिगत रूप से देखने और उनकी महिमा को अनुभव करने का अवसर मिला है। इनमें से कई एक निम्नलिखित हैं -

1. वह बहुत बड़े सफाई पसन्द हैं। जैसे वह आत्मा के विचार से पूर्णतय: पवित्र हैं, वैसे ही वे बाहर से भी अपने सारे मकान और आंगन और अपनी सब पुस्तकों को बहुत ही साफ अवस्था में रखते हैं।

2. वह बड़े व्यवस्था - प्रिय हैं। उन्हें अपनी कोई वस्तु भी अनाप शनाप रखनी सहन नहीं होती। वह अपनी प्रत्येक छोटी से छोटी वस्तु के लिए भी उचित स्थान नियत करके अपनी सब पुस्तकों को सलीके से सजाकर और सामंज्य और सुन्दरता की अवस्था में रखते हैं।

3. वह अपनी सब काम की वस्तुओं को बहुत सम्भाल कर रखते हैं। वह किसी छोटी से छोटी वस्तु का गुम हो जाना या जहां तक सम्भव हो अपनी आयु से पहले घिस जाना या टूट जाना या नष्ट हो जाना सहन नहीं करते। यही कारण है, कि उनका एक एक कपड़ा या एक - एक बर्तन जितनी देर तक उन के पास सुरक्षित रहता है, उसे देख देख कर आश्चर्य होता।

4. वह एक तरफ बहुत बड़े मितव्ययी हैं और उसके कारण एक पैसे की भी फिजूल खर्ची पसंद नहीं करते, परन्तु दूसरी ओर वह इतने उदार हैं, कि किसी उचित आवश्यकता के समय हजारों रूपये खर्च करने में भी कोई संकोच नहीं करते और पर - हित भाव से उन्होंने रुपये का दान किया है।

5. वह बहुत बड़े दयालु हैं। उनके सन्मुख यदि कोई छोटे से छोटा या तुच्छ जीव भी अनुचित कष्ट पा रहा हो तो उसे देखकर उन्हें कष्ट होता है और यथा सम्भव वह उसके इस कष्ट को दूर करने का प्रयास करते हैं।

6. वह पूर्ण सत्यप्रिय और न्याय प्रिय हैं। उनके सन्मुख चाहे उनके बड़े से बड़े और निकट के पारिवारिक सम्बन्धी वा सेवाकारी सेवक का मामला पेश हो, वह किसी अवस्था में भी सत्य और न्याय के विरुद्ध कोई फैसला नहीं करते।

7. वह एक ओर अपने भीतर आत्म सम्मान का बहुत प्रबल भाव रखते हैं और उस के कारण कहीं भी और किसी से भी अकारण अपमानित होना नहीं चाहते और दूसरी ओर अनेक परिचित या अपरिचित गुणधारी मनुष्यों के लिए उचित सम्मान का भी प्रबल भाव रखते हैं। और जब कभी उन्हें किसी देशवासी या विदेशी जन के किसी सद्‌गुण का वर्णन करने का अवसर मिले तो वह उसे ऐसे हार्दिक भावों और जोश के साथ वर्णन करते हैं कि सुनने वाले अधिकारी जनों के भीतर भी उनके लिए सम्मान का भाव जोश मारने लगता है। इससे भी बढ़कर उनके देव हृदय में हितकर पशुओं, पौधों, और निर्जीव वस्तुओं के लिए भी उचित सन्मान और स्नेह का भाव वर्तमान है।

8. उनके हृदय में कृतज्ञता का महान भाव इतना गहरा है कि वह और तो और अपने एक एक बहुत बड़े उपकृत मनुष्य की भी किसी विशेष सेवा के लिए कृतज्ञता अनुभव करते हैं और उसकी कोई विशेष सेवा करने के लिए विवश हो जाते हैं और एक

एक विशेष उपकारी के रूप को सन्मुख लाने से उनका हृदय इतना भाव विभोर हो जाता है कि एक एक बार भरी सभा में वह विवश फूट फूट कर रोने और इस प्रकार अपने भाव व्यक्त करने लग जाते हैं।

9. उनके भीतर कर्तव्य का प्यार अत्यन्त असाधारण रूप में विकसित हुआ है। वह अपने किसी कर्तव्य को पूरा करना असम्भव प्रतीत न हो, तब तक वह उसे बराबर पूरा करते हैं और उसमें कोई सुख या स्वास्थ्य का विचार या कोई प्रलोभन या भय तनिक भी रोक न पैदा करता है और न ही कर सकता है और वह अपने प्रत्येक कर्तव्य को उचित समय में और उत्तम रूप से पूरा करते हैं।

10. वह बहुत बड़े प्रबंधक हैं, उनके सन्मुख चाहे किसी प्रकार के कितने ही काम क्यों न हों, वह उन सबका बहुत अच्छा प्रबन्ध करते और कर सकते हैं।

11. वह समय के बहुत बड़े पाबंद हैं जहां तक सम्भव है वह अपना प्रत्येक काम नियत प्रोग्राम के अनुसार और नियत समय में पूरा करते हैं।

12. वह थोड़े से समय में बहुत सा काम करने वाले हैं। एक एक पुस्तक के विशेष अंशों पर निशान लगाने, एक एक नया लेख लिखने या किसी लेख के संशोधन करने के काम को वह इतना अधिक और इतना अच्छा करते हैं कि उसे देखकर बहुत हैरानी होती है।

13. वह उच्च नियमों के पूरे पूरे पाबंद हैं। वह जहां कई बातों में एक एक छोटे बालक या कुली की बात भी मान लेते हैं, वहां जिस बात के मानने से उनका अपना या नेचर का कोई सच्चाई या भलाई का नियम टूटता हो, उसे वह कभी नहीं मानते चाहे वह बात कैसे ही किसी बड़े से बड़े जन की क्यों न हो। और ऐसी दशा में किसी प्रकार की विरोधिता और बदनामी की भी परवाह नहीं करते।

14. वह अपनी सब निम्न शक्तियों के सच्चे प्रभु हैं। उनकी कोई निम्न शक्ति उनके सर्वोच्च जीवन व्रत की सिद्धि में किसी भी प्रकार की रोक नहीं पैदा कर सकती और नहीं करती। वह अपनी इन शक्तियों को अपने जीवन व्रत के सम्बन्ध में जैसे चाहते हैं, काम में लाते हैं।

15. उनके लिए अपनी शारीरिक सामर्थ्य के अनुसार प्रतिदिन विविध सम्बन्धों में जितना अधिक से अधिक सेवाकारी होना सम्भव है, उतना सेवाकारी होने के बिना उन्हें किसी प्रकार चैन नहीं आता। वह जब लिखने, पढ़ने और बोलने के काम करने के अयोग्य हो जाते हैं, तब भी चुपचाप नहीं बैठ सकते बल्कि उस अवस्था में भी उच्च विचार या शुभ कामना करने और एक या दूसरे स्थान में किसी पौधे आदि की अवस्था को सुधारने का यत्न करते हैं।

16. वह पूरे संयमी हैं। अपने जीवन के सबसे श्रेष्ठ और अत्यन्त हितकर लक्ष्य की सिद्धि में उन्हें जहां कहीं अपने स्वास्थ्य का त्याग करना.... या शारीरिक हानि उठाना अनिवार्य हो जाता है, उसके भिन्न वह अपने शारीरिक स्वास्थ्य के विषय में नाना प्रकार के संयम और नियमों का इतना ध्यान रखते हैं कि उसे देखकर हम चकित रह जाते हैं।

17. वह बहुत बड़े ज्ञान अनुरागी हैं। शरीर के विचार से रोगी और दुर्बल होकर भी वह प्राय: एक या दूसरी पुस्तक या अखबार के अध्ययन के द्वारा अपने ज्ञान को बढ़ाने का यत्न करते हैं।

18. वह विश्वगत प्रत्येक सम्बन्धी के साथ जीवंत सम्बन्ध अनुभव करते हैं, और वह जहां एक ओर अपने जीवन के श्रेष्ठ भावों के कारण किसी अस्तित्व को भी अनुचित कष्ट या हानि नहीं पहुँचाते, वहां

दूसरी ओर अपने भीतर हित अनुराग सम्बन्धी ऐसे बहुत से बोध रखते हैं कि जिनके वश में होकर वह नाना जगतों के नाना अस्तित्वों को यथा सम्भव हानि से बचाने या उन्हें उन्नत करने का संग्राम करते रहते हैं।

19. वह सर्वांग सत्य और शुभ स्वरूप हैं, वह अपनी प्रत्येक चिन्ता और क्रिया, अपने उसी सर्वोच्च और परम कल्याणकारी लक्ष्य की सिद्धि के लिए करते हैं जो उन्होंने...भरी जवानी में ग्रहण किया था और जिसे उन्होंने सदा स्मरणीय शब्दों में इस प्रकार वर्णन किया था

"सत्य शिव सुन्दर ही मेरा परम लक्ष्य होवे,
जग के उपकार ही में जीवन यह जावे।"

20. वह देव ज्योति और देव तेज के अद्वितीय सूर्य हैं। मैं जब कभी भी उनके सन्मुख गया हूं, या एकांत में मैंने उनके देव रूप के साथ कुछ भी योग किया है, तब सदा ही उनके भीतर से ऐसी ज्योतिर्मय किरणें मेरे हृदय तक पहुंची हैं, जिनमें मैं अपने आत्मा और उसके विनाश अथवा विकास के सम्बन्ध में एक या दूसरे अत्यन्त मूल्यवान सत्य देखने के योग्य बना और अपने भीतर एक या दूसरी नीत गति से निकलने या एक वा दूसरी उच्च गति ग्रहण करने के लिए प्रेरणा या बल अनुभव करने लगा हूं। मुझे उनके देव ज्योति और देव तेज सम्पन्न देव प्रभाव अपने आत्मा के लिए उसी प्रकार जान और प्राण की वस्तु अनुभव होते हैं, जिस प्रकार बाहर की रोशनी वायु, आहार, जल और औषधि आदि शारीरिक जीवन के लिए जान व प्राण की वस्तु हैं।

बात यह है कि श्री देवगुरु भगवान की देव ज्योति में उनके देवरूप के सम्बन्ध में जो जो सुन्दर और अत्यन्त हितकर दृश्य मेरे सन्मुख प्रकट होते हैं, मैं उन्हें पर्याप्त रूप में वर्णन नहीं कर सकता और मैं किसी के साथ भी उनकी कोई तुलना नहीं कर सकता। मुझे अपना यह बहुत बड़ा सौभाग्य अनुभव होता है कि मुझे उनका केवल तुच्छ सेवक बनने का अधिकार प्राप्त नहीं, बल्कि उनके निकट रहकर नाना अंगों में उनके सर्वश्रेष्ठ देवरूप कर दर्शन करने और उनके ऐसे रूप के निकट करने वाले नाना धर्म साधनों या कामों में ही व्यस्त रहने का अति श्रेष्ठ अधिकार भी प्राप्त है। मेरी यह हृदय-गत कामना है कि मैं अपने भगवान के देवरूप का और उसके सम्बन्ध में अधिक से अधिक सत्यों का और भी अधिक दर्शन करने के योग्य बनूं। और उनके साथ जीवंत और उन्नतशील आत्मिक सम्बन्ध में बंधकर या उन्नत होकर उनका सच्चा अनुरागी शिष्य प्रमाणित हो सकूं।

धर्म बल

(जीवन तत्व 18 फरवरी 1918)

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए। (लाईफ़ वर्कर) मंत्री-देव-धर्म-मिशन। प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, Chandigarh*** *से छपवाकर म. नं. 3154, सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

Book Post